

1. गुम्म भेल ठाढ़ी गोपेश
2. बलचनमा - यन्त्री

MAITHILI

# गुम्म भेल ठाढ़ी

Mai  
891.431 (mai)  
Gop

रचयिता  
श्री गोपालजी भा 'गोपेश'



प्रकाशक  
कुटुम्बा परिवार  
काजीपुर, पटना-४

दाम — एक टका मात्र



प्रकाशक

टुट्टा परिवान

पहिल खेप

काजीपुर, पटना-४

सर्वाधिकार

कविक अश्वीन

मुद्रक

आदर्श प्रेस

पटना-४

## आहे माहे

अनुभूति हो वा अभिव्यक्ति मौलिकताक दानी केओ नहि कए सकैछ । कोनो स्तर पर नहि । जीवन मे की नव थिक आ की पुरान, तकरो निर्या करब कठिन । सत्यक शिला पर इतिहारो बसाइत बसाइत बिलुप्त भए जाइछ । जानि नहि भिनुसर ओ सौभक आवर्तन मे कतेक प्रत्यावर्तन हेत । परन्तु एतेक धरि सत्य जे समयक पएर तर जे दबि गेल से 'पुरान' यीक आ' जकर प्रतिफल बसाते नहि बहए से 'नव' । एहि संग्रह मे युगधर्म ओ रथानीय रंगक निखार कहाँ धरि उतरल अछि तकर निर्या करवाक अधिकार अपनहि केँ अछि । हमर पहिल कविता-संग्रह 'सोनदाइक चिट्ठी' जहिआ बहराएल तहिआ मैथिली जगत मे ओकर रंग विरंगक टिप्पणी भेल, नकर उल्लेख करब एतए प्रयोजनीय नहि बुझना जाइछ । मुदा, अपन पहिल संग्रह सँ हम पूर्ण सन्तुष्ट छलहुँ आ' पाठक लोकनि मे ओ ततेक लोक-मिथ सिद्ध भेल जे उल्लेखित भऽ, कए आइ दोसरो संग्रह दए रहल छी ।

आदरणीय प्रोफेसर श्री हरिमोहन भा जी केँ हम साहित्य-प्रणयनक क्षेत्र मे अपन दिशानिर्देशक मनैत छियेनि । तेँ हुनका सँ उद्भूत नहि भए सकैत छी । कविताक शब्द-योजना मे अपन पहिली भीमती प्रभावती मा, श्री० ए० आनर्स सँ प्रदुत सुभाओ भेटल अछि । मुदा हुनका की धन्यवाद दिऐनि ? आवरण शिल्पी श्री प्रशान्त केँ सेहो नहि बिसरि सकैत छियेनि जे



एतेक कार्य व्यस्तता रहितहुँ पूर्ण तत्परता देख प्रेरित । बन्धुवर श्री कैलाश  
प्रसाद सिंह ( पटना हाईकोर्ट ) तथा श्री इन्द्रकान्त भा (कार्यालय सचिव  
चेतना समिति) एहि संघर्ष के लक्ष्यवा लेख सदिनन टोकारा दैत रहलाह में  
दिनकहुँ प्रति अपन आंगार प्रकट करैत छी । अन्त मे दुहा परिवार  
माइनजन श्री अर्जुन ठाकुर केँ धन्यवाद दैत छिऐन्हि जे मैथिली प्रकाश  
दिशि प्रगाढ़ अनुराग देखओलन्हि अछि । आदर्श प्रेसक स्वत्वाधिकार  
श्री सहदेव बाबू सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह जे एतेक कम समय मे तत्पर  
पूर्वक पोषी बहार कए सकलाह ।

हरबही मे जे प्रेसक नुटि रहि गेल आछ, तद्व क्षमा माथी छी ।

कार्तिक धवल त्रयोदशी

विद्यापति स्मृति दिवस

शक : १८८८

श्री गोपालजी भा 'गोपे'

२५-११-६६

मिथिलाक प्रतिनिधि	१
हम आ हमर युग	४
एक व्यक्तित्व : दुइ चित्र	६
प्रीतान्तर	८
युग धर्म	१२
हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जे होइतहुँ	१४
समर्थ	२०
कल्पना	२१
पिजुलिक दिमाग	
आ' यन्त्रक जाँस	२२
भारतक भाटि सँ	२३
सोनदाइक नव चिट्ठी	२४
उपलब्धि	२६
समुक्लक अस्तित्व	३१
दहाटही इजोरिआ मे	३२
शीर्ष मे ककरो सँ बनेस नहि	३३
जवान केँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर	३५
प्रयोगवादी गमछा	३७
दिलकोर	३८
जय जवान जय किसान	४०
युगबोध	४१
बाह्र वर्षक बाद सासुरक यात्रा	४६
गुम्म भेल ठाढ़ छी	४८



## समर्पण



प्रो० श्री अनिरुद्ध झा एम० ए०  
दर्शन विभाग, परना विश्वविद्यालय

विमल कीर्ति जनिकर पसरल अखि  
विद्या बुद्धि अपार  
अपित हो अमजक चरण मे  
अनुजक ई उपहार

—'गोपेश'



## मिथिलाक प्रतिनिधि

ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम  
जाहि देश केर माटे पानि मे नव तीरम छइ  
जाहिठाम हँसइत अछि भरती खल खल खल खल  
जाहिठाम गयनागिराम होइछ जइकाला  
जाहिठाम शादल पर चनकर मोती सन सन पाला  
जाहि देश मे लहलहाइत अछि दोलछिक गम्हड़ा  
जाहिठाम अगणित प्रसून पर सुवधए मम्हड़ा  
जाहिठाम कमलाक धार मे फुदकर मारा पोठी  
अनपूणी भरलन्हि जत्त कहिओ धर धर कोठी  
काँशिकीक जल काइत रहइछ कलकल जतए निनाद  
जाहि मुनि केँ भेल न कहिओ रचहुमात्र क्वाद  
जाहि देश मे प्रकृति नचइ अछि सँदिलन झम झम छन झम  
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम  
जाहिठाम पाओल जाइछ डोका सन मुचर ओलि  
फइकइवए लगमात्र जाहिठो गुतालहि सँ पौलि  
जाहि देश मे होइत अछि तरवारि सनक भू-रेख  
देखए सन आवा विचार मे अउपहरा ओ सेल  
अदुलक कोठी सन दुहदुह जत्त नारी केर डोर  
गधुर बजार बहए जइँ नहुँ-नहुँ रम्य जाहिठो गोर  
जाहि देश मे अपइछ सभ जय जय भोला शिवदाजी



नामी जत्त बृहत्क पटुआ ओ बेलिक नसिदानी  
 जाहिठौक भिक पैष धरोहरि गिरजइ साठा पाग  
 कोकटिक धोती राम-नाम मे रुचिगर पटुआ साम  
 जाहिठाम बड़िआँ होइछ ठेका बड़ाय ओ सीक  
 जाहि देश मे नैहर केर कोओ लगैत अछि सीक  
 जाहिठौक उरलेख्य पर्व धिक बल त्रयोदाश चौडीचान  
 अट ओ जड़िन तोड़ि जत्त इन्द्रहुँ केर गुमान  
 जाहि भूमि सन सासुर नहि अछि कोनो देश ओ ठाम  
 आधेसी सरहोज सारि ओ सरही बलसी आम  
 'मन्यं शिवं सुन्दरम्' केर जे पावन संगम थीक  
 समान-चकेवा भावृद्धिआ स्नेहक जतए प्रतीक  
 होइत छथि नैरहि सँ लुङ्गिरि जाहि देश केर नारि  
 प्रियगर लगइछ जननानस केँ जनिकर उहकन गारि  
 जाहि देश मे गाओल जाइछ तिरहुति ओ समदौन  
 जाहि देश मे नव विवाहिता करवथि बहुत मनीन  
 धिसरथि नहि जत्त केर धीया सौँक तुरसारी पूजव  
 वैवाहिक गौरह जइठामक नहि जनैत अछि पूजव  
 जाहि देश मे अहिपन सुनर ओ सीकीक चँगेरी  
 जाहि देश मे बटुको होइछ बड़या गोट मैंगेरी  
 जग जानित अछि जाहिठाम केर देस-कोस मे भोज  
 राजतिहार होइतहि रहइछ घर आउन मे रोज  
 जाहिठौक इतिहास अपन अछि आर दिव्य भूगोल  
 जाहि देश मे सौजन्यक नहि भए सवैत अछि सोल

जाहि देश केर लोक न होइछ ककरो डरें सकदम  
 जाहि देश केर प्रतिनिधि छी हम  
 जाहि देश मे होइछ चहटगर सूडी ओ पकमान  
 खोआ भरल पिकिआ अनुपम कोजागराक मखान  
 मोटगर छालिहक दही जत्त आओर तनहा चूड़ा  
 अति विन्यास सँ कोइरवि गृहिणी जत्त रोहुक मूड़ा  
 मालमोग केर भात मुन्नदगर तइ पर राइडिक दालि  
 कइकइ पी तरल तिलकोरा अछि जत्त केर चालि  
 जाहि देश मे बिलहल जाइछ खिलवडी मे पान  
 जना धुवारी नरि-भरि वाकुट जाहिठौक सम्मान  
 जाहि ठाम उपलब्धि समाठ बजैतहि रहइछ धम धम  
 जाहि देश केर प्रतिनिधि छी हम  
 जाहिठाम प्रतिभा सवहक धिक जन्म-सिद्ध अधिकार  
 नव्य-न्याय करे दीप जरीतनि गौरीशक अवतार  
 जाहि देश मे वाचस्पति ओ मंडन केर पथार  
 एक-एक साधक केर जइठौ पसरल कीर्ति अपार  
 गौर-भुक्ति छथि गौरवशालिनि जनक जनिंक हरबाह  
 जाहि ठाम कहिओ छलाह शास्त्रक पंडित चरबाह  
 जाहिठाम एखनहुँ जोगोल अछि गप्प सभक कमठोड़  
 जाहि देश केर गोन् भा केर भेटए न कत्तहु जोड़  
 जाहि देश मे गाछ-टाट पर अमरवेलि लतराएल  
 जाहिठाम डबरहुँ मे सोमए कमलक फूल फुलाएल  
 जाहिठाम जन-जन केर मुख सँ चुबइछ अमृत सदिसन  
 जाहि देश केर प्रतिनिधि छी हम



हम

आ

हमर

सुग

बुद्धि वही\* खेपड़त ली हमारा लोकनि  
सुग हमर आन्हर नहि  
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ  
बिदेक हमर नाइर नहि  
उपर सँ बुझि पड़ी बिदेक ने ककरो  
स्वार्थक ज्वाला ओ कटु कालिमा  
आ' छल-छल सँ रंजित हमर परिधान  
मुदा हम थिकहुँ योग्यता ओ सामर्थ्यक धरोहरि  
धर्म, समाज ओ अन्धविश्वास  
रहल अझि सभ दिन सँ उपदेष्टामात्र  
हृदय ओ बुद्धि  
कल्पना ओ बशर्था  
मिज्ञान्त ओ व्यवहार  
दुहुँक दुइ घाट, दुइ घाट  
( ४ )

( ५ )

हम थिकहुँ घोर बुद्धिवादी  
अग्धा केँ तर्कक कसौटी पर कसनिहार  
अधिकार आ' कर्तव्यक प्रति सदित्तम श्रद्धावन्त  
ओ स्पुतनिक युगक कान्तिदर्शी मानव  
विघटित सभ्यताक मूल्य  
आ' कु'दित आरथाक हेतु  
चेतनाक उद्घोष  
आ' सभावनक दिव्य-स्रोत

—: ० :—



एक व्यक्तित्व :

दुह चित्र

( १ )

बइसओने एक भाग अलसीसिअन कुरर  
आ' पजिअओने लाल दुह दुह टोर वाला र्कोटलैरडक विशोरी के  
स्लेटी रडक तीस हजारि कार पर मोटका चुकट धुकरत  
चक्कर कटइ छथि नगरक चारु कात  
कपडाक थोक व्यापारी श्री पकाडीमल भुनभुनिआ  
अरे ! के नहि जनइछन्हि हिनक नाम  
बरइ छन्हि नगर भरि मे हिनके टारा धी  
चलइत छन्हि हिनक चरि-चरि टा निनेमा  
आ' कतेकी प्रस्तुत वस्त्र मण्डार  
टीसथ में निरले दच्छिन  
फाललन्हि हैं विलैंतक उतार पर हाल हे मे भव्य होटल  
स्वदेश ओ परदेश समटा छन्हि रहल-रहेल  
कलकत्ता, बम्बइ, पेरिस ओ रिवटवरलैण्ड  
आजुक गीतिकवादी युग मे  
इएह बिका बका, विष्णु ओ महेशक प्रतीक  
आ' इएह बिका सम्य मानव  
ज्ञान-गुण गरिमा मण्डित

( ६ )

( ७ )

हिनक व्यक्तित्वक सोझों  
नतमरतक कोनो पण्डित  
बइसओने एक भाग अलसीसिअन कुरर  
आ' पजिअओने लाल दुह दुह टोर वाला र्कोटलैरडक विशोरी के  
स्लेटीरंगक तीस हजारि कार पर मोटका चुकट धुकरत  
चक्कर कटइ छथि नगरक चारु कात  
कपडाक थोक व्यापारी श्री पकाडीमल भुनभुनिआ

( २ )

धन्य बिका सेवक जी  
करुं आ' दधीचि सन जनिक आदर्श व्यक्तित्व  
गांधी बाबाक जे पक्का कनुगामी  
गीताक अटारहो अध्याय जनिका जीहे पर  
"अहंकारं बलं दयं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।  
विदुष्य विमर्शः शान्तो ब्रह्मभूयाय कुरुते ॥"  
लोक सेवा जनिक जीवनक पुनीत ध्येय  
जनताक किलास मे जे रेल पर बइइत छथि  
आ अगवे जे सर्वोदयक राहरि दरइइ छथि  
अपार जन सस्ह जनिक उत्साहवर्जक भाषण सुनि  
अगिला चुनाओ मे जितएबा लए आकुल अछि  
धन्य बिका स्वामी, तपस्वी ओ मनस्वी व्यक्ति  
हृदय परिवर्तन जनिक काल्हए सन भेल अछि  
केओ बजैइ इएह थीक बाणवक कुटनीति



( ८ )

जेजो बज्ज इएह श्रीक आधुनिक राजसीनि  
 जकरा जे मोन होउ ते नायसी नृदा  
 ओ तँ थिका जननायक  
 छथि न ज्ञाय बनिसौ  
 चढ़ाओल रेशमीक बनिसानि पर खदरक कुता  
 श्री वक्रीडीमल सुनसुनित्रा

— ० —

## फ्रीलान्सर

धार सँ गिरले दखिन  
 बेस अकाए बोन छइ  
 आ' विचवहि मे स्थित छइ  
 शिव लिङ्गत् प्रतर खण्ड  
 बुढ़बा तारक भोक सँ  
 चुपइत छइ बुन्ने बुन्न  
 स्तुतिदायक नीराक रस  
 आ' भोग लगइ छन्हि शिवजी केँ  
 आमोदयोगक चहटगर टोनिक  
 पुरिवा पछवा लोटइ अछि-शिलाखण्ड पर  
 साँभ परात  
 ओ रड विरगक गर्द सँ  
 बाबाक स्वागत करइत अछि  
 आ' चढ़वइ अछि हुनक डाली मे  
 अधजख्खा बीड़ीक टुकड़ी  
 खड़इल सलाइक काडी  
 कोनो निराश जेमीक डावरीक पन्ना  
 हॉलीउड तारिकाक नेल पालिसक खप्पी  
 ( ९ )



( १० )

लिपस्टिकक टुड़ टुकड़ी

स्वतन्त्र उमेदवारक जन्मा पहिरने

मोट में अड़ कोनो पार्टीक विस्तार-

कार्यकर्ताक एक्सेशन पोस्टर

आ' दुरगमविश्रों कनिश्रोंक लो' इच्छ महक

दूँ-या दुमिधान

जुटितहि रहइछ ओतए

विकनिकिआ कालेज छात्र छात्राकवहुरी दल

जेना कोनो तीर्थरक्षक भू

भक्त जन जुटइत हों

साइत अछि

पिचइत अछि

गरि पेट

गरि पोख

आ' चढ़चढ़ छन्हि औइर दानी बूढ़ा केँ

सेँ डबिन टोस्ट

आ' मार्टन टोफी

आ' बकर बकर बाबा तक्तिहि रहइत छथि

मक्खन जीनक पैण्ट

नाइलनक ड्रेस सर्ट

रेशमी सलवार

जालीदार कर्ती

( ११ )

हवाइ चप्पल

आगभा कैमरा

आ' धर्मस लटकओने

प्रश्ना परिणत मनुपन्तानक दुलकी चालि

बाबा श्रीलान्मर छथि

तेँ नहि छन्हि मन्दिर

आ' नियमित रूपेँ

सहर भ' कर नोगो

नहि लगइत छन्हि

श्रीलान्मर साचहिक

इएह थीक दिव्य लक्षण

फलगू नदी जेकाँ अन्तः सलिल प्रवाह

ओ भुक हास-परिहास

तेँ मनुपसक स्वच्छन्दता केँ

कहल जा सकैछ जीवनक चरम उत्कर्ष

शंकरक महिमा

ऐतिहासिक गरिमा

आ' व्यापक शिवतन



## युग धर्म

लोक हम बनगति-धुनक  
 कोनो देश  
 कोनो दान्त  
 उपमा नहि आनदाम  
 साइत छी विस्कुट  
 आ' बिबड़त छी गरम चाह  
 कोइआ सँ नापि-नापि  
 सैत छी सुगन्धित तेल  
 डारइ छी मगज पर लोटाक लोटा पानि  
 रगड़इ छी साबुन पर साबुन  
 बनएवा लए शान्ति  
 आ' परवा लए शान्ति  
 मधखन जिनक पेट पर सँ  
 चढ़वइ छी मनीला  
 पहिरइ छी हवाइ चप्पल  
 करइत छी लीला  
 नीक जेकाँ धोखने छी  
 फायदक सिद्धान्त सार  
 पइसइ छी अचेतन मे निधोखि

मोलि हम चेतन द्वार  
 बिलेपण करइत छी  
 युग-युग सँ मोतिआएल दमित इच्छाक  
 तृष्णाक ज्वाला मे  
 स्तार कएल अन्तरक अद्या  
 आ' बोरि लेल  
 भरल कटौत आइन्वर मे  
 अपन बहत्तरि हाथक अँतरी के



## हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु (लेखक)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु  
अयोगवादी रचना करितहु  
अपनहि लिखितहु  
अपनहि बुझितहु  
रीन कादि पोथी छपवितहु  
आलोचक केँ देखितहि भगितहु  
सुहं कविआ केँ गप लड बितहु  
बात-बात मे टाड अडवितहु  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु

(गीतकार)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु  
मकरन जीतक फूल पैट पर

( १४ )

( १५ )

नाइलन केर सुतसर्ट चढ़वितहु  
हवाई चपल धारण कर  
सोकेँ बम्बई केर टिकट कटवितहु  
खूब चहटगर रतगर फिल्मी गाना लिखितहु  
लता आर गीता केर कंठहार धनि जइतहु  
फिल्मजगत मे नाम कमवितहु  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु

(छीं के टार)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु  
बाहक डिकेदार भ' जइतहु  
अन्नक थड़का गोला फोलितहु  
नथ डिजाइनक घर बना कर  
सन्तुक सन रेडिओ धुधुअवितहु  
लहना आर तगेदा करितहु  
टका अरजि कर चुर्ज कर लिखितहु  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहु



( १६ )

### (इंजीनियर)

हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ  
कोनो ठाम इंजीनियर रहितहुँ  
बिस्की में थिजुली-लए जइतहुँ  
अदृष्ट रजदी किछु नहि करितहुँ  
सरसी सभटा खेत रोपितहुँ  
टेण्डर में खुबे हथिअबितहुँ  
नहिपँ कखनहुँ डेकार करितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ

### (प्रोफेसर)

हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ  
कोनो ठाम प्रोफेसर रहितहुँ  
लंदन सँ पीएच० डी० लवितहुँ  
सात मोट इन्किमेंट पबितहुँ  
सेटर औ टेबुलेटर रहितहुँ  
क्लोक विषयक बोर्ड में रहितहुँ  
सिनेट सिंडिकेट में रहितहुँ  
एन० सी० सी० केर कैप्टन रहितहुँ

( १७ )

पोथी लए सीरम में पड़ितहुँ  
सीन-मेथ सभटाम देखितहुँ  
सभशास्त्रक अधिकारी बनितहुँ  
प्रिन्सिपलक दरवारो रहितहुँ  
सेव अनार मुनका खइतहुँ  
एलिकैटा औ अजन्ता जइतहुँ  
जगता केर किलास में चड़ितहुँ  
कपटक मासुल चार्ज कर शितहुँ  
मोटहि सँ कलासहुँ में भसितहुँ  
फाँकी दए चटिआ फें टफितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ

### (डाक्टर)

हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ  
एफ० आर० सी० एम० डाक्टर रहितहुँ  
धुओ सए टाका निस्व कमबितहुँ  
फीस-याचना में नहि चुभितहुँ  
कुकुर जेकाँ रोगी पर मुफितहुँ  
सदिखन मुह बनओने रहितहुँ  
कंडलंगोट चढ़ओने रहितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग में अहाँ जँ होइतहुँ



( १८ )

(वकील)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ  
हाइकोर्ट मे प्रैक्टिस करितहुँ  
नहि बलि सकितए सेबो सरचा  
गुह विभुअओने भखिन हि रहितहुँ  
गाउन मे चेफरी सटबवितहुँ  
फूलक कली कोट मे खोसितहुँ  
गुअकिलक असरा मे रहितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(अफसर)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ  
कोनो विभागक अफसर रहितहुँ  
निश्चय आई० ए० एस० भए जइतहुँ  
लिपिकवर्ग पर रत्न जमवितहुँ  
चरमहि तर सँ शौखि गुइरितहुँ  
कनफेरेंस, सेमिनार मे जइतहुँ  
टी० ए० सँ कोउ केँ करितहुँ

( १९ )

तीस हजारी कार कीसितहुँ  
श्रीमती सऊ चक्कर कटितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(नेता)

हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ  
मिरजइ छोपडा पाग छाडि  
नेता केर सभटा ड्रेस बनवितहुँ  
पीडा पावक खिल्ली खइतहुँ  
सदिसन पटना दिल्ली जइतहुँ  
सभ विषय पर भाषण करितहुँ  
बहुनो ठाँ उद्घाटन करितहुँ  
हे कविकोकिल  
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ



## अथार्थ

[ एक ]

हमरा घर लग रहइछ एकटा  
ताडि बर्ष बेर बड़ा  
मुतरी सन उज्जर छइ ओकर फेस  
छैक डेराओग ओसि  
भखडि गेल छइ दौत  
चोटकि गेल छइ गाल  
मुदा न ककरो बुझि पड़इ छइ  
ओकर असल उमेर  
नकली रह सँ रहल समटा केस  
रखल टिप्पल नइ  
मुह मे लागल मुन्गर दौतक सेट  
काजर कएल ओसि  
पोति नेने अछि पाउधर सँ ओ गाल  
प्रेम-प्रणय सँ रहइछ सदिलन कात  
उज्जर दप दप छैक छिक शिल्क केर नुआ  
आओर करिआ आडी  
बात बात मे छिटकावैछ वतीसी  
जेना कोनो हो शुज पोइसी  
रूपवती मुकुमारि

( २० )

## कल्पना

[ ४ ]

हुनका घर लग रहइछ एकटा  
बीस वर्ष बेर बाला  
कान्ति जकर छइ दिव्य  
सेव सनक छइ गाल  
डोका सन-सन ओसि  
खड सनक मूरख  
दाड़िम सन-सन दौत  
ओ छिड़िआएल केस  
मुदा न ककरो बुझि पड़इ छइ  
ओकर असल उमेर  
कौन बयस मे  
पैसख लेलक थकाए  
घरक धिकि गिरथाइनि  
बनय टनय नहि ओकरा छैक पसिन्न  
बुद्धि जेकाँ ओ बाजए गढ़ि-गढ़ि  
समटा सीमल बात  
पाहिए मोटका मनगिलाउ केर साडी  
आडिक छैक न बात  
नहि ओकरा जीवन सँ किछुओ मोह  
जानि न कसन मूह देति ओ बाचि  
लावण्यक अभमान  
धिक ई निधिक विधान

( २१ )



## बिजुलिक दिमाग

### आ' यन्त्रक जाँत

बिजुलिक आधुनिक दिमाग सँ  
 होइछ गणितक कठिन सँ कठिन प्रश्नक समाधान  
 खेलल जाइछ शत/जक खेल  
 आ' ग्राओल जाइछ गीत  
 बौचल जाइछ धाराप्रवाह  
 सत्यनारायणक कथा ओ वेदमन्त्र  
 आ' संचालित होइछ शासनतंत्र  
 लन्दनक छद्मरीस वर्षीय इंजिनियर  
 यमुपिंड कमचुटरक निर्माण कर  
 फोर्लि देल युग युग सँ मूलत ओलि  
 आ' काटि देल कल्पनाक पौखि  
 अपने हम पाछों छी  
 छति हमर आगों अछि  
 सोझों मे लक्ष्य नहि  
 डेग मुदा ससरल जाइछ  
 देखि लिअ आधुनिक विज्ञानक उपलब्धि  
 आ' वपजेठ मनुख केँ रॉकेट उड़वैत  
 आ' राहदिक दालि जेकाँ यन्त्रक जाँत मे दइरैत  
 नैतिकता, आस्था ओ अव्यारम केँ

## भारतक

### माटि सँ

धन्य भारतक माटि,  
 होइत छीक एते लतखुरदनि  
 युग-युग सँ सुतल ब्रह्म तैओ  
 तूरतेल दसकान  
 तोहर वस्त्र पर टहलि रहल बहु  
 अंग्रेजक सन्तान  
 ढोल नगाड़ा बाजि रहल छह  
 तोड़ह आवहुँ नीन  
 फोलह शिवक बिनेअ आ देखह  
 चढ़ल अवे बहु चीन  
 बनितहु आव न अगठओने  
 नहि मुनतहु केओ मधुगान  
 रघए रुद्र केर तांडव नर्तन  
 बहु देशक आह्वान  
 मानि लैह हे माटि

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)



## सोन दाइक

### नव चिट्ठी

हम करइत न्ही नितदिन परेड  
चलवइ छी बन्नुक सौंभ-आत  
देशक खातिर मरि जैब मुदा,  
नहि बटए देबे चीनीक खात  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

गौंधी बिकाइ आदर्श महर  
भगवान् बुद्ध केर कथेकोन  
नहि जौंति सकल कनफुतीअस  
चीनी सचइक अति कुद गोम  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

हल्दी घाटी केर प्रांगण सँ  
बहइछ हिमगिरि पर नव बजार  
भौतिक रानी केर वीरताक  
मुनघय राधा गंगाक धार

( ३४ )

( २५ )

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

सक्षम रेखा नहि लौंवि सकल  
मद सँ प्रमत्त लोकागरेस  
ई मैकमेहन थिक सँह रेख  
जे पार करत नए जैत रोष  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

विस्तारवाद नहि नीति हमर  
भारत सम दिन सँ अछि उदार  
“हिन्दी-चीनी भाई-भाई”  
छल होगमान चीनक प्रचार  
नहि करतइ केओ परतोत ओकर  
जकरा नहि कनिअँ छैक शीख  
सहितक आगौं बेणुक अबाज  
तहिना ओकरा लए पंचशील  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।



लगतैक सेहन्ता ककरा मे  
जे देखत हम्पर प्रजातं न  
आधार जकर बन्धुत्वपूर्ण  
ओ सत्य अहिंसा मूलमन्त्र  
एहि स्वतंत्रता केर रक्षा लए  
सर्वोत्तम हम कए देन दान  
हाही धिरवा किछु कए न सकत  
हम दाहि देव शत्रु क गुमान  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

इतिहास लिखल स्वशोकर से  
होशिअर मिह केर नाम अमर  
नायक मु'शी सन वीर सँ जतए  
जे आत्म-विसर्जन करल समर  
भारत देशक सैनिक बल पर  
अछि हमरा सभकेँ बड़ गुमान  
अनुशासन-प्रिय अछि जतए लोक  
तकनहुँ नहि जोड़ा जकर आन  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

देशक खातिर उत्सर्ग कएल  
युग सँ जोगौल मइरमाला  
औंठी, चाली ओ नकमुन्नी  
आ' चारि गरिक कटगर बाला  
थिक अल्प वचन एक अनुष्ठान  
नहि बढि कए एहि सँ दान-पुण्य  
जे नहि परवाहि कएल देशक  
से महामूर्ख थिक बुद्धि-शून्य  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

मोटर हॉकन हम सीखि लेल  
थिक टाइप करब बड़ सोभकाज  
मलहम-मडी पहिनहि सीखल  
समहारि लेब आकिसक काज  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

अनतीर्य भेल छथि एहिठाम  
नायडू सरोजिनी सनक नारि  
हुनका लोकनिक आदर्श कएल  
ओ पाबि सकत पेकिडक नारि



( २८ )

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

बारह नम्बरक सलाइ अहाँ  
पटना सँ किनि जे पठादेल  
तैआर कएल नव-नव डिजाइन  
स्वेटर मौआ पलटनक लेल  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

चीनी कट फ़ैश बुद्धुन्नरिसन  
सुह मे नहि एको रती पानि  
धीपल-भापल उत्तमल स्वरूप  
नहि सुन्दरता मे कतहु मानि  
भारत सौंदर्यक ज्ञान थीक  
नहि परतर एकर करत ज्ञान  
कश्मीर सेथ सन गाल जतए  
आ मुख लगइत अछि दूरैचान  
अदुलक कोदी सन ठौर जतए  
तइपर कखनहुँ मुक्तीक रेख  
सब दख जतए नयनामिराम

( २९ )

आ तरुआइरि सन भौह-रेख  
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ  
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ  
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।  
(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

— ० —

## उपलब्धि

### हातिखन—

कतहु सँ हेको-हेकोक आवाज  
कविगोष्ठी मे आएल छल  
रसास्वादन जकर कएल कुएटा-यस्त प्रबुध श्रोता लोकनि  
—आ' कविगोष्ठीक अध्यक्ष महोदय

### गोरखन—

लौकिक रॉन्ड दैत जलाह  
रवांथ-विज्ञानक गोर पारियेक बेचा  
संगहि गोर दसेक बुद्धुन्नरि बुद्धुआइत छल  
आ' कोनो बम्बईआ तारिकाक आगौं-पाछौं  
आंठोथाक लेवा खेल बेहाल डलाह  
स्थानीय कालेशक एकटा प्रोफेसर



## दुपहर में—

बुनिवरसिटी लेकर बिबेटर मध्य  
 आयोजित हल कोनो विचार-नोप्ली  
 जकर विषय हल 'इमोशनल इन्टेग्रेशन'  
 जाहि में अध्यक्षा कएल एकटा संस्कृतक पंडित  
 आ' उद्घाटन एकटा फिल्म निर्माता

## राति में—

देखनि छलिअनि पंडितजी केँ  
 टोस्टक सब चाइक चुरकीलैत  
 पैदिकीजी भेटला सिनेमे में  
 देखए आएल छल। राजकपुरक 'सतरंगी तमाशा'  
 सब में गृहणियों हलधिय  
 काडिगन पहिरने, लिफ्टिक लगओने  
 आ' किदनि-किदनि पंडितजी सबे कर्षवत

— १०१ —

## मनुक्खक

## अस्तित्व

मनुक्खक अस्तित्व  
 मैवर में जेना कोनो डेंगी चाह  
 आ' विहाडि पाथर में सुटकल कोनो खोताक चिड़े  
 मालरि जेकोँ धर-धर-कैपेइ जकर फोँड  
 आ' अधर पर परिच्यप्त व्यथाक पातर रेल  
 ताँसे पर ठाड़ अछि  
 हाड़ मांसक ई शरीर  
 एक्के नियम सँ सेवासित होइछ  
 गरीब ओ अमीर  
 जिनगी मित चढ़इत अछि बिता मसान में  
 बलिक बकरा धिक सारिपहुँ मनुक्ख  
 उच्च आदर्श जकर निहित  
 आत्म-बलिदान में  
 ओकर सकल कृतित्व  
 युग युग सँ पोसल कुंठा ओ आकांक्षा  
 रहि रहि कर उफनाइछ  
 आ दर्प सँ पूर भए मनु सन्तान  
 सदिसन डनमनाइछ



इएह बिचक ओकर उपलब्धि  
आ' इएह ओकर धरोहरि  
आ' एकरे परतापेँ ओ खेनइ अछि दिन-राति  
आ चढ़बै अछि पीतर पर निषोख सोनक पानि

— ० —

## टहाटही इजोरिआ मे—

टहाटही इजोरिआ मे—  
घाटी सख अछि  
मुदा अनेदुप ओ रहस्यमय मार्ग  
केवल साधकेँ टा जनेँ अछि  
सिन्धु ज्वारमे धरा पर पसरइ अछि  
आ हृदय मए जाइछ  
अनन्त प्रसार मे छोट-छोटी द्वीप

.....  
टहाटही इजोरिआ मे  
जगत् ओदभासित अछि  
आ युगसन्धिक चीबट्टी पर  
बटोही अछि पथने कान

— ० —

## शौर्य मे

### ककरो सँ उनैस नहि

सत्य ओ अहिंसाक पुजेगरी बिकहुँ हमरा लोकनि  
मुदा तेँ शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि  
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ  
आस्था हमर कुठित नहि  
मर्त्यादा ओ सांस्कृतिक प्रतीक जेँ हम अनन्तकालहि स  
तेँ नहि भेल अछि हमर विवेकक हास  
हमर रण-कौशल ओ पराक्रमक गाथा  
ओतए पुरान अछि  
जनेक हमर देशक इतिहास  
हमर मशीनगन, मोर्टल, राइफल ओ रॉकेट-प्रक्षेपक  
सभ किछु उजागर अछि  
आ' हमर टैंक ओ आर्टिलरीक सोझाँ  
सभ किछु छुगुर अछि  
के नहि जगैछ हमर कीर्तिशाली नैटक नाम  
जकरा सोझाँ सकल प्रयास बेकाम  
पैटन टैंकक नोसि मुडकैत  
जे मोर्चा पर करल महाप्रयाण  
सरिगहुँ अपन चीर हमीदक खातिर



भारत के छैक गुमान  
 हमर देश जागि गेल अछि  
 जागि गेल अछि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख ओ ईसाई  
 हमर राष्ट्रीय-एकता देखि कऽ  
 ककर ककर ने टोर पर फुफ्फू पड़े छ  
 'आ' अकिल गेल छइ हवाइ  
 भारतक एक-एक 'लाल'  
 सरिपहुँ 'बहादुर' अछि  
 गान्धिमिक रक्षा जेकर मूलमंत्र  
 'आ' जे कहिओ सपनहुँ मे नहि भए सकै छ  
 बिसरिओ कए परतन्त्र—

— १० —

## जवानकेँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर—

परम प्रिय प्राणनाथ नम्र एगारह सँ तीस  
 भेटि गेल मीथलग टाकी गोर बिस  
 रेडिओ सँ सुनने छलहुँ अहाँक सनेस  
 भलेठरी मे चल गेलाह बंगदू गनेस  
 कहाँदि लड़ाई भन्त भेलाँक बाँकी  
 लेल गेल अछि बलदूसि केँ सँ  
 'आ' खड़ीओ उचारि कए लाल काकी कहने छली  
 जे फला केँ नहि लगलनि हेँ कुलोक कलेप  
 दुनदुनो बचए हमहुँ पलटन में भरती हैव  
 'आ' बापूए जेकाँ टैक ओ मशीनगन खैव  
 तनने रहव बन्दुक बैटाएव सहि ध्यान  
 अमर रहत हमर सोहाग जँ चलिओ जैत अहाँक जान  
 माइओ दै छथि सम्पत तेँ रखबनि दुबक लाज  
 देश रक्षा सँ बढ़ि कए दुनियाँ मे नहि दोसर फाज  
 परसू सँ बाबी भए ले लनि अछि खाट  
 पुत्रिओ घर छड़ाए गेल 'आ' लागि गेल टाट  
 आएल छलथिन मौसरासनी मे छोटकी दाइक बर



अनने छलधिन तीन भरिक अतरणीक छुडइ  
 गाए गेल बिहसि आ' महिस निआए  
 एकटा खुशीक बात जे हम सीसै छी निआए  
 मोन होइए भाटा अदौडी खाए  
 मरुआक रोटी, गरचुनोक सावा नै सड एकटा काँच मिरचाइ  
 बाड़ी मे उपजल छल मकड़ दस तेर  
 काटि कऽ कोढ़िआ सभ लऽ गेल जगेर  
 आइन मे कुनरइ अछि कोआ नित भोर  
 अहाँ बिकहुँ गुड्डी आ हम बिकहुँ डोर  
 कोइल स ते आएल छल गाछ दहीक भार  
 उतारा देब जरदी घृभि एकरा तार  
 जादा इति चन्द्रकला तारीख पचीस  
 पावधि जवान मधुकाल भा जग्मर एगारह सए तीस

(पाकिस्तानी आक्रमण काल मे रचित ।)

—: ० :—

## प्रयोगवादी

### गमछा

ई थिक प्रयोगवादी गमछा  
 साविकक तीनी  
 आ' पुरुखा लोकनिक धराउ  
 मुदा आजुक प्रज्ञा-परिणत लोक एकरा  
 लपेटै अछि डौड़ मे  
 आ' लपेटवा सँ पहिने  
 जेँ चौपेतव आँखि नहि  
 गरितक तेँ धोअएवा सँ पहिनेहि एहिपर  
 इस्वी चडबैत अछि  
 हे देखि लिअ नव लोकक नव प्रयोग  
 धोआ सजा कऽ  
 पहिरवा सँ पहिनेहि  
 एकरा गोबरीद मे बोरि लेल  
 आ' धो-धाए कऽ पहिरवाक प्राचीन परम्परा  
 चूल्हि मे भोकाए गेल

—: ० :—



## हिलकीर

भारत-नेपालक सीमान्तक घाम मध्य  
ओ कोनो दीप शिखा जेको जड़ित छल  
अम सँ पलान्ति छलैक ओकर दुइ ओसि  
आ' कोनो अक्षत देशक अपरिचित गाथा मे  
ओ बहुतो गण बजइत छलिन  
ओसि मे छलैक झाहरि  
आ' गगनक नीलिमा  
ओ केराक अद सँ हुलसी दैत भगवान भाकर  
हम ओकरा देख ने छलिनइ  
लुत्ती सन दुपहरि मे  
सीमान्तक घाम मध्य  
जाहि ठाम अम छैक  
कलान्ति छैक  
ओ छैक मुन्नर सौंभ  
मुँडी भरि भात छैक  
आ' भरल वाटी दासि  
भरल आइन नाच छैक  
आ' कंड भरल गीत

हम ओकरा देखने छलिन  
ज्योतना-भलान प्रागुनक राति मे  
मुता कलखन कर हमरा होइछ  
जे हम नहि देखिसिऐक  
जेना हम किछु देखनहि ने होइ  
आ' ई सभ हमर उद्मान्त कल्पनाहो



जय जवान

जय किसान

छुट्ट करल जननीक कोर एहि तिपम काल में लाल  
त्याग तपस्या सँ गौधले जे सह अस्तित्वक माल  
आदर्शक पाछों बलिदासी व्यापक जे व्यक्तित्व  
"ताराकन्द" केर उपलब्धि बिक जनिक अमर कृतित्व  
संकल्पक कुबेर जे मानव भारत माँ केर पूत  
हिमिगिरि सन शम्भू जे सरिपहुँ शान्तिक दूत  
गौतम, गौधी आर जवाहर केर जे रखलनि ऐक  
कएल उजागर धरती अपन मित्र बनौल अनेक  
ताहि "बहादुर" मानव केँ अर्पित अछि श्रद्धा-भूल  
नहि बिगाड़ि सकलनि जनिकर किछु मदवा ओ दिक्षूल  
"जय जवान" ओ "जय किसान" केर स्वर परसल सभ ठाम  
लिखल रहत सोनक आखर मे शास्त्रीजी केर नाम  
लोकतन्त्र केर रक्षा खातिर बिसरलाह नहि नीति  
परम्परा केर अनुगामी भारत केर अमर विभूति  
एकताक सन्देश अमर देए स्वयं गेला गुरधाम  
"लाल बहादुर" अमर भए गेला, विश्व कए गुणगान

( ४० )

युगबोध



जीवक अछि  
जीवि लिअ  
जीवन रस पीवि लिअ  
तीत लागए  
भीउ लागए  
कहुना कऽ  
कोहि लिअ

अकरा जे मोन होइ  
करए दिअउ  
कहए दिअउ  
बाजब तँ  
दुरि जैव  
विरडो बसात मे  
रस्ते सँ घुड़ि जैव

बुद्धि चढ़ल रोकट पर  
भावना पड़ुआएल  
नीति ओ अनीति मध्य  
कियाँ मोतिआएल

( ४१ )



ओर नहि ओर नहि  
सब किछु निपत्ता  
सतरल जाइछ डेग मुदा  
सोभौ मे खच्छ

नान्हि ठा जिनगीक  
इएह थीक सधुक्का  
भावनाक मुष्ट पर  
अंकित अन्तर्व्या

करइत अछि मौल केर  
बम्मा अनबोल  
बिजुलिक इज्जत मे  
चक्रमक अछि टोल

पंखाक हवा मे  
तेराए गेल चाह  
विचारक प्रवाह मे  
मोन हुसिताह

बदलि गेल युग  
मुदा पुरनके अछि तान  
गिलोठमे छवि पणिआर  
भरि मूह पान

कोइलाक सम्भता मे  
नवल धवल वस्त्र

सूत्र वाक्य बाबाक

कहबा लए अस्त्र

युग अछि प्रयोगक  
विज्ञानक सबदास  
नव मान्यताक सङ  
बदल मनक प्वास

कोन थीक टलहा  
ओ कोन थीक तोन  
युग सन्धिक चौवटी पर  
ठकुआएल मोन

अतुल आकांक्षा  
ओ कुंठाक राज  
मौनिक उलझि थीक  
जीवन केर साज

पछवा वसात मे  
मोन भेल चोर  
मथि गेल गद्दे सँ  
ओलि कात ठोरे

गुनैत रह धुनैत रह  
पूर्वक इतिहास  
आधुनिक सम्भता सँ  
ठेकल अकास



अगट विनट किन्तु नहि  
 मात्र दृष्टि-दोष  
 युगक सड बदलि गेल  
 अर्थ शब्दकोष

जीवक अडि  
 जीवि लिअ  
 जीवन रस पीवि लिअ  
 तीत लागए  
 गीठ लागए  
 फलुना फऽ  
 घोटि लिअऽ

जकरा जे मोन होइ  
 कहए दिअ  
 करए दिअउ  
 बाजब तँ  
 घूरि जैव  
 बिरहो बसात मे  
 रस्ते तँ घूरि जैव

कुञ्ज चढ़ल रंकिट पर  
 भावना पडुआएल  
 नीति श्री अनीति मध्य

क्रिया मोतिआएल  
 ओर नहि छोर नहि  
 सब किछु निपठा  
 ससाल जाइव डेग मुदा  
 सोझें मे खचा

—: ० :—



## बारह वर्षक बाद सासुर यात्रा

बारह वर्षक बाद पुनः हम गेल छलहुँ रैलास  
नव धरातल नव क्षितिज मे देखल नव प्रकाश  
बहुत छल उनटा बसात चहुँदिस बेलास छल लोक  
एकरोट नहि साभी आश्रम हूँ, विवाद न शोक  
चिन्ता सँ पीअर कोस भए शैल जलाइ सगर  
मुह बिभुअओने सासु छली चटुआ पर तुमइत तूर  
सरहोजिक मुटु मे चान्हल देखल सारक टीक  
अकयक किछु नहि तुमहि हुनका कोटने जाइथ पीक  
'महवा' टेलह मेल सरबेटा अहरी तीनु नाइ  
'तूनु' 'बीनु' आओर 'नीनु' देखलहि मेल पडाइ  
नीस लोटइ छल दरवज्जा पर कोचरा पर ओहीन  
साविक केर आइन सँ पच्छिम सारक घर छज नीन  
नया जमाना नया लोक केर चिक्कल-चुनमुन गात  
झिटकावैत बतीसी देखल विनु पैगिक सब बात  
आवेसी सरहोजे न करहु आर न मेटलि सारि  
'हली माइबिअर' 'आं० के० मिस्टर' नवका बुग केर गारि  
उगटापझा कएने देखल रखने किलमी चूल  
कार्डिगन ओ शॉल बुनइ छलि 'लंग' 'अरीची' 'फूल'

( ४६ )

( ४७ )

मेक-अप सँ एहन सन कम जे शूटिंग सए तैआर  
कोरो गनि-गनि दुलहा लोकनि ठोकथु अपन कपार  
अव्वल काट खाइछ जे कीड़ा कहुना नहि परकार  
सासुक उपर झोड़इत देखल पुतहु के फुत्कार  
छालही चुडा मेल अलोपित मात्र टोमट ओ चाह  
बिनु वजने सेहो नहि भेटत मुखले रहव निशान  
भाम गुइथु पुरना जमाए, नवका टटाथु दिन राति  
अनट बिनट जे किछुओ बजता सएबो करता लात  
भए गेल बर सभक अबनुत्यन डेग-डेग पर दाओ  
एहि महगी मे घटल जाइत अछि आपकता बैर भाओ

— ० —



## गुग्गुलु मेल

### ठाढ़ छी

वसन्त

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी  
मकरमपुरक चौबट्टी पर  
जुनवड़ छी तमाकू  
आ' देखड़ छी तमाशा

पढ़वा समय जाइत अछि  
हैंज आन्हि चटिआ  
आ' गुड़गुड़ाइ सकुटी सैं  
आएल फटफटिआ

ताहि पर सवार छथि  
नव घर-कनियाँ  
गुड़लही छोड़ी पर  
चढ़ल अछि बनिआँ

वीत-वसना कनियोंक  
जालीदार दोपट्टा  
सूनि रहल पतझड़ मे  
सगर परोपट्टा

( ४८ )

( ४९ )

साविक मे जनीयातक  
एक मुट्ठी खोपा  
आय नैं डेगे डेग  
तपोवनी खोपा

साविक मे लोक पहिरए  
मिरजइ ओ' चपकन  
आधुनिक लोक के' 'छे न पाइए' 'टी शर्ट'  
बूढ़ि गाएक धंटी तन 'झांजिर' लटकन

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी  
मकरमपुरक चौबट्टी पर  
जुनवड़ छी तमाकू  
आ' देखड़ छी तमाशा

ग्रीष्म

गुग्गुलु मेल ठाढ़ छी  
विरसाइरक पाकड़िनर  
जुनवड़ छी तमाकू  
आ' देखड़ छी तमाशा

लुत्ती तन दुपहरि मे  
मोन अछि घोर  
भवि गेल नदैं तैं  
कोहि नदैं नदैं

१३



आगिक मोल करैल  
कीनद छवि पीसा  
ककरो नहि अवइत छै  
वरिसाइतक सीसा

डलडाक सोहारीमे  
बेह ठेढ़ बकुला  
बिज्जू ओ कलमी मे  
लुबधल अछि टिकुला  
कलजुगही कनटिरवी  
करैए अकहड़  
कोइली तँ पुछइ छइ  
'हमर बिआर कोसहर'

टेक मे लगि गेल  
भकड़ाक जाला  
हन हन अछि सन्नुक  
आ लटकल आछ ताला  
गुम्म भेल ठाढ़ छी  
बिरसाइक पाकड़ितर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा

वर्षा

गुम्म भेल ठाढ़ छी  
महेन्द्रघाटक जडी पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा

भीजि गेलनि सौसिक  
सज्जल तिन पढ़िआ  
मीड़ मे पचकि गेलनि  
मामीक अढ़ि बा

टिकस बाबूक जुता मे  
सन्हिआएल बैग  
परसू तँ गाड़ी नहि  
जाइत अछि 'हेंग'

ससि पड़ल घुटर भा  
पाछौं दू कीड़ी  
आहिरे बा भीजिगेल  
तीसी अदीदी

गुम्म भेल ठाढ़ छी  
महेन्द्र घाटक जडी पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा



## शारद

गुम भेल ठाढ़ छी  
मेहथू घाटक छहर पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा

रुद्रा विपरक भौंक मे  
दवलक अछि नीलकंठ  
कोइलाक सम्यता मे  
चारू कात लंठे लंठ

मुकुन बाबू दोकान मे  
भेटता नटि रैची  
रुचिगर लगैत अछि  
डोवहीक मैची

परसू तैं एहिठाम  
लागत बेसाइ  
तुक पर कंभारपुर मे  
पावरोटी चाह

गुम भेल ठाढ़ छी  
मेहथू घाटक छहर पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा

## हेमन्त

गुम भेल ठाढ़ छी  
लोहना रोड टीसन पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा

मोटरी सम्हराइ छथि  
चुरहा ओ चुरही  
मोसाफिरखाना मे  
झिझिआएल अछि मुरही

आँजुरक आँजुर  
दोलडीक धान  
बहिरिनी हमर  
गिलोठने अछि पान

बिसरि गेल धियाभूता  
“साने ओ भवतू”  
बबो आव पौन केँ  
सिखवइ छथि “वन-टू”

प्लास्टिक फूल धीक  
टेबुल केर शान  
बदलि गेल रागरड  
बदलि गेल तान

गुम भेल ठाढ़ छी  
लोहना रोड टीसन पर  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देखइ छी तमाशा



TABLETUE

गुम्म भेल ठाढ़ छी  
लाल भौजिक मुहधरिलग  
चुनवइ छी तमाकू  
आ' देसइ छी तमाशा

गूड़-चूड़ा मिचराकऽ  
फाँकइ ब्रिध सरपच  
बगड़ा सन खोता मे  
मुटकल अछि संचनंच

बाबा केँ होइतछनि  
एक सलगाक जाइ  
बाबीकेँ धेलकनि  
मलेरिआ खोखार

धीख सन बात बाजए  
पाच भरिक जीत  
आहि रे बा गुमतरिगेल  
कोबीक सुखीत

बुढिआक फूसि थीक  
भौजिक भोर  
भेआ केँ मनधैत  
भऽनेलनि भोर

गुम्म भेल ठाढ़ छी  
लाल भौजिक मुहधरि लग  
चुनवइ छी तमाकू  
आ देसइ छी तमाशा